ISSN–2277- 8721

EIIRJ Electronic International Interdisciplinary Research Journal

Volume–XIII, Issues – I (Special Issues -I) Jan – Feb 2024

OPEN ACCESS Original Research Article

स्वाधीनता आंदोलन,हिंदी और गांधी

डॉ. राम सदाशिव बड़े

स्वामी रामानंद तीर्थ, महाविद्यालय,

अंबाजोगाई

किसी भी देश की पहचान उसकी भाषा से होती है। भारत की पहचान भी उसकी भाषा और संस्कृति के कारण है। भारत एक बहुभाषिक राष्ट्र है। यहां अनेक भाषाएं बोली जाती है। यह देश विभिन्न प्रदेशों में विभाजित है। यह देश ऐसा देश है, जो विविधता से भरा हुआ है। अनेकता में एकता भारत की पहले से ही पहचान रही है। यहां के खाने में विविधता है, यहां के रहन-सहन में विविधता है। परंतु जब भी भारतवर्ष पर किसी तरह का संकट आता है, तब भारतीय लोग एक साथ इकट्ठा होकर उस संकट का मुकाबला करते हैं।

राष्ट्रीय आंदोलन में जब गांधी युग का सूत्रपात हुआ, तो हिंदी का प्रचार- प्रसार तेजी से होने लगा। बापू अपनी सभा ,प्रवचन हमेशा हिंदी में दिया करते थे। उनकी यह भी कोशिश थी कि राष्ट्रीय आंदोलन को गति देने के लिए, जितने भी आंदोलन हो सारे के सारे आंदोलन हिंदी में ही हो। इसलिए सत्याग्रह, असहयोग आंदोलन, सविनय आंदोलन, भारत छोड़ो आंदोलन जनता के बीच में एक दूसरे की कड़ी को जोड़ने में सहायक हुए हैं। इसके अतिरिक्त स्वाधीनता आंदोलन के जननायकों के भाषणों पर भी यदि हम नजर डालें तो हम पाएंगे कि उनकी मातृभाषा हिंदी नहीं, परंतु उसके आसपास की जनता की भाषा रही है और उस भाषा के माध्यम से ही उन्होंने जनता में अपने विचारों को प्रचारित - प्रसारित किया है। वह सब इसलिए ऐसा करते थे, ताकि जनता की भाषा जनता आसानी से समझ सकती है और वह जनता की भाषा हिंदी थी।

रही बात हिंदी के उत्थान में महात्मा गांधी के योगदान की, इस बात को कोई भी भारतीय नकार नहीं सकता कि हिंदी के उत्थान में महात्मा गांधी का अपूर्व योगदान रहा है। उन्होंने केवल हिंदी ही नहीं अपितु भारत की अन्य भाषाओं के उत्थान में भी भरपूर योगदान दिया है। परंतु उनका मानना यह था कि हिंदी देश के अधिकतर हिस्से में बोली जाती है,इसलिए हिंदी भाषा का विकास तेजी से होना चाहिए। वह लोगों की आम भाषा है। लोग उस भाषा को समझते हैं। अपने विचारों को व्यक्त कर सकते हैं। अपनी वाणी को एक दूसरे तक पहुंचा सकते हैं, जो विचारों का आदान-प्रदान का एक आसान साधन बन सकती है। इसलिए उन्होंने अन्य भाषाओं की तुलना में हिंदी भाषाओं को अत्याधिक महत्व दिया है।

Copyright © 2024 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY-NC 4.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited.

ISSN–2277- 8721

EIIRJ Electronic International Interdisciplinary Research Journal

Volume–XIII, Issues – I (Special Issues -I) Jan – Feb 2024

OPEN ACCESS Original Research Article

हिंदी को राष्ट्रभाषा का दर्जा दिलाने में भी महात्मा गांधी का भरपूर योगदान रहा है। जब हिंदी और उर्दू भाषा का विवाद चल रहा था, तब बापू ने हमेशा ही हिंदी भाषा का पक्ष लिया है। उसके पीछे उनका उद्देश्य उर्दू को विरोध करना नहीं था, बल्कि उनका मकसद यह था कि हिंदी उन लोगों की भाषा है, जिसको भारतीय लोग आसानी से समझ सकते हैं इसलिए उन्होंने उस भाषा का समर्थन किया था। बापू एक युग पुरुष थे। इसलिए बापू की बात को नकारने की हिम्मत किसी भी भारतीय में आसानी से नहीं हो सकती थी। उनका कार्य केवल भाषा के लिए ही नहीं, बल्कि अन्य क्षेत्रों में भी उच्चतम कोटि का था। इसलिए बापू भारत वासियों के तारणहार भारतवासियों के सब कुछ बन चुके थे। यह बात सच है कि गांधी जी के जमाने में जनसंचार के साधन अत्यंत सीमित थे, लेकिन जो भी साधन उनके पास थे, उन साधनों के माध्यम से गांधी जी ने अपने विचारों को लोगों तक पहुंचाने का काम किया है।

दक्षिण भारत की अपेक्षा उत्तर हिंदुस्तान में सामान्य लोगों की भाषा हिंदी थी। गांधी जी जब भारत दर्शन कर रहे थे, तब उन्होंने देखा की स्वतंत्रता आंदोलन तो चंद पढ़े लिखे शहरी बाबू और वकीलों के हाथ में जा रहा है। हिंदुस्तान का हर व्यक्ति अगर इस आंदोलन में भाग नहीं लेगा, तो फिर स्वतंत्रता कैसे मिलेगी। इस बात की चिंता महात्मा गांधी को हो रही थी। उनको लगा कि अगर यह सिलसिला इसी तरह से चला रहा, तो हमें स्वतंत्रता कदापि नहीं मिलेगी। इसलिए उन्होंने आम जनता की भाषा की नस्ल को पकड़ा और स्वतंत्रता दिलाने के लिए भरपूर प्रयास किया।

गांधी जी स्वयं जानते थे कि अपने विचार हिंदी जगत के सामने किसी के अनुवादक द्वारा प्रकट करना काफी नहीं है। उन्होंने स्वयं कुछ ना कुछ हिंदी में लिखना आरंभ कर दिया। समय-समय पर कुछ ना कुछ हिंदी में लिखने लगे। आखिरकार उन्होंने हिंदी में ही अपना मौलिक लेखन आरंभ कर दिया। वह लेखन जनता को भी काफी पसंद आने लगा और जनता में जागृति लाने के लिए सहायक साबित होने लगा।

भाषा प्रेम के संदर्भ में काका साहब कालेलकर ने बड़ा अच्छा लिखा है - "कि जब गांधी जी ने अपना जीवन कार्य अफ्रीका में शुरू किया, तब दक्षिण अफ्रीका में जाकर बसे हुए भारत के गिरमिटिया मजदूरों के बीच और छोटे-छोटे दुकानदारों के बीच उन्हें अपना काम करना पड़ा। ऐसे लोग समझ सके वैसी ही भाषा में उन्होंने अपने योगदानकारी विचार रखने पड़े। लोगों में बातचीत करते समय लोगों की ग्रहण शक्ति और भाषा की शक्ति का ख्याल गांधी जी को मिल जाता था। गांधी जी ने कभी भी यह नहीं कहा कि ऐसे अनपढ़ लोगों को लेकर मैं क्या करूं।"1

महात्मा गांधी जी ने एक स्थान पर लिखा है-" आपका प्रेमवश होकर मैंने हिंदी नवजीवन को निकालने का साहस किया है। जब से मैं भारत वर्ष में आया हूं तब से मेरा संबंध आपसे निकट होता जा रहा है। अपने मेरी प्रवृत्ति को प्रेम भाव से देखा है। और मुझे सहायता दी है।आपने हिंदी प्रचार में भी बहुत मदद की है। आपकी ही सहायता से हिंदी का प्रचार आज द्रविड़ प्रांत में अच्छी तरह से हो रहा। है आप भाई- बहन सहयोगी है। आप राष्ट्रीय जीवन में रस लेते हैं। अपने देख लिया है कि धनी पुरुष और स्त्रियां राष्ट्रीय जीवन से बाहर मुक्त नहीं रह सकती। अखिल भारत की राष्ट्रीय समिति ने स्वराज्य प्राप्ति के लिए, जो कदम उठाया है उसमें आप लोगों की ओर से

ISSN–2277- 8721

EIIRJ Electronic International Interdisciplinary Research Journal

Volume–XIII, Issues – I (Special Issues -I) Jan – Feb 2024

OPEN ACCESS Original Research Article

सहायता मिलने पर ही संपूर्ण सफलता मिल सकतीहै। उक्त समिति ने निश्चय कर लिया है कि आगामी 30 सितंबर तक प्रदेशी कपड़ों का पूरा बहिष्कार कर दिया जाए। मैंने आप ही के विश्वास पर सितंबर मास की अवधि रखने की सलाह दी है। अत: यह हो। इस स्वदेशी आंदोलन को प्रबल बनाने के समय में हिंदी नवजीवन का प्रकाशित होना उचित है। "2

भारतीय लोगों में महात्मा गांधी के प्रति आघात विश्वास था। वह जानते थे कि गांधी जी, जो भी बात छापेंगे वह सत्य ही होगी। उनका छपा हुआ कोई समाचार गलत हो ही नहीं सकता। वह असत्य हो ही नहीं सकता। वह जनता को जो भी सलाह देंगे वह उनके लिए हित कारक ही होगी। यह आस्था, यह विश्वास संपूर्ण भारतवासियों के मन में था। इस महान अनुष्ठान में बापू की पत्रकारिता का योगदान निर्वाद रूप से महत्वपूर्ण रहा है। उन्होंने पत्रकारिता के द्वारा जनता को जगाया। उनकी शंकाओं का नीरसन किया। उनका समाधान किया। उसमें नैतिक कीमत पैदा की और जूझने के लिए आत्मविश्वास भी सदैव पैदा करते रहे। पत्रकारिता के माध्यम से वे और एक काम करते रहे संपूर्ण देश को एकता के सूत्र मैं बांधने में सफल रहे। आगे चलकर यही एकता का सूत्र देश को स्वतंत्रता दिलाने में काफी हद तक मददगार साबित हुआ। हम सब जानते हैं कि महात्मा गांधी कोई व्यावसायिक लेखक नहीं थे , जो विषय सोचते रहते हैं। गांधी जी ने समय-समय पर अपनी निजी हिंदी में जो लेख लिखे हैं वह समय की आवश्यकता को देखकर या लोगों को प्रेरणा देखकर लिखे हुए हैं। उस समय मूल रूप से पर्दा प्रथा, बाल विवाह, मध्य निषेध , उच्च-नीच का भेदभाव जैसे सामाजिक विषय पर उन्होंने अपने लेख लिखे हुए हैं। इतना आत्मीय बनाकर लिखा कि पाठक उनके साथ जुड़े तो रहे लेकिन हमेशा ही आगे भी चलकर वे जुड़ते ही रहे। गांधी जी द्वारा हिंदी में कुल 630 लेख लिखे हुए मिलते हैं। महात्मा गांधी जी ने सबसे ज्यादा लेख हिंदी या हिंदुस्तानी के बारे में ही लिखे हुए हैं । जिनकी संख्या लगभग 24 बताई जाती है। राष्ट्रभाषा हिंदी के प्रचार -प्रसार के लिए गांधी जी ने अपने लिख के माध्यम से जो योगदान दिया है वह काबिले तारीफ है।

गांधी जी एक स्थान पर कहते हैं -"अखबार के माध्यम से मुझे मनुष्य का रंग बिरंगी स्वभाव जानने का मौका मिला। संपादक और ग्राहक के बीच, निकट का और स्वच्छ संबंध स्थापित होने की धारणा होने से मेरे पास हृदय खोलकर रख देने वाले पत्रों का ढेर लग जाता था। उसमें कड़वे मिटे और भांति-भांति के पत्र मेरे नाम आते थे। उन्हें पढ़ना, उन पर विचार करना, उनमें से विचारों का सार ग्रहण करके उत्तर देना यह सब मेरे लिए शिक्षा का उत्तम साधन बन गया था। मैं संपादक के दायित्व को समझने लगा और मुझे समाज के लोगों पर जो प्रभुत्व प्राप्त हुआ उसके कारण भविष्य में होने वाले लड़ाई संभव हो सकी। वह सुशोभित हुई और उसे शक्ति प्राप्त हुई।"3

महात्मा गांधी का मानना था कि मां के दूध के साथ जो संस्कार और मीठे शब्द हमें मिलते हैं, उनके और पाठ्यशाला के मध्य जो मेल होना चाहिए वह विदेशी भाषा के माध्यम से नहीं हो सकता। इस संबंध को तोड़ने वालों का हेतु भले ही पवित्र क्यों ना हो,फिर भी वे जनता के दुश्मन ही है। हम ऐसी शिक्षा के वशीभूत होकर एक प्रकार से मातृद्रोह करते हैं। इसके अतिरिक्त विदेशी भाषा द्वारा शिक्षा देने से शिक्षित तथा सामान्य जनता के बीच दूरी भी बढ़ जाती है। यही स्थिति अधिक समय तक कायम रही, तो एक दिन लॉर्ड कर्जन का

ISSN–2277- 8721

EIIRJ Electronic International Interdisciplinary Research Journal

Volume–XIII, Issues – I (Special Issues -I) Jan – Feb 2024

OPEN ACCESS Original Research Article

आरोप सही हो जाएगा कि शिक्षित वर्ग जनसाधारण वर्ग का प्रतिनिधित्व बिल्कुल नहीं करता। गांधी जी मानते थे कि भारत की जनता को अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा देना यानि एक प्रकार से उनमें अंग्रेजीयत लाने जैसा है। एक विद्वान ने लिखा है - "अंग्रेजी भाषा के माध्यम से शिक्षा में कम से कम 16 वर्ष लगते हैं। यदि इन्हें विषयों की शिक्षा मातृभाषा के माध्यम से दे दी जाए, तो ज्यादा से ज्यादा 10 वर्ष लगेंगे। यह बात बहुत से अनुभवी शिक्षकों ने प्रकट की है। हजारों विद्यार्थियों के 6-6 वर्ष बचने का अर्थ यह होता है कि कई हजार वर्ष जनता को मिल गए हैं।"4

महात्मा गांधी के समय में हिंदी और उर्दू के बीच में काफी विवाद छिड़ा हुआ था। हिंदी या उर्दू की अपेक्षा गांधी जी हिंदुस्तानी शब्द अधिक उचित समझते थे,जो दोनों के बीच की भाषा है। दोनों के विवाद को कम करने का काम कर सकती है। उसे भारत की राष्ट्रभाषा भी बनाया जा सकता है। देवनागरी में लिखी जाने पर हिंदी तथा फारसी लिपि में लिखी जाने वाली वह उर्दू की कही जा सकती है। परिणाम यह हो सकता है कि दोनों के बीच में विवाद कम होगा और बेशक हिंदुस्तानी या हिंदी इस देश की राष्ट्रभाषा होगी।

अतः यह कहा जा सकता है कि हिंदी को हिंदुस्तान की राष्ट्रभाषा बनाने में महात्मा गांधी जी का योगदान अपूर्व रहा है। हम तो यहां तक कहते हैं कि अगर गांधी जी ना होते, तो इस देश की राष्ट्रभाषा भी हिंदी न होती। शायद हिंदी की जगह अंग्रेजी ने ली होती और यह हिंदुस्तान, हिंदुस्तान नहीं, बल्कि अंग्रेज या अंग्रेजी के बीच में पला बड़ा गुलाम हिंदुस्तान हो जाता। इस संपूर्ण लेख का निष्कर्ष एक ही वाक्य में दिया जा सकता है और वह है - गांधी न होते तो इस देश की राष्ट्रभाषा हिंदी न होती।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. राष्ट्रभाषा हिंदी और गांधीजी, सपा : डॉ अंबा शंकर नागर, भारतीय भाषा संस्कृत संस्थान, गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद पृष्ठ. 130
2. बापू की कलम से, संपादक : काकासाहेब कालेलकर, नवजीवन प्रकाशन, आश्रम मार्ग अहमदाबाद, पृष्ठ. 228
3. गांधी जी साहित्य, रमन मोदी प्रथम संस्करण, नवजीवन प्रकाशन, आश्रम मार्ग, अहमदाबाद, पृष्ठ. 145
4. डैटसन जी. ए., 1918, पृष्ठ. 426

Cite This Article:

डॉ. बड़े र. स. (2024). *स्वाधीनता आंदोलन,हिंदी और गांधी*, In Electronic International Interdisciplinary Research Journal: Vol. XIII (Number I, pp. 22–25) **EIIRJ.** https://doi.org/10.5281/zenodo.10646499